www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-1* *January 2025***

दलित कहानियों का स्वरूप– एक अध्ययन

अमित कुमार

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, बी0 एन0 एम0 यू0 मधेपुरा

सारांशः दलित साहित्य भारतीय साहित्य की एक महत्वपूर्ण धारा है, जो सदियों से उपेक्षित और शोषित दलित समुदाय की पीड़ा, संघर्ष और अस्मिता को केंद्र में रखता है। दलित कहानियाँ इस साहित्य की प्रमुख विधा हैं, जो स्वानुभूति पर आधारित यथार्थ चित्रण करती हैं। दलित कहानियों का स्वरूप मुख्य रूप से प्रतिरोध, विद्रोह और सामाजिक समानता की आकांक्षा से निर्धारित होता है। यह साहित्य न केवल दलितों के भोगे हुए यथार्थ को उजागर करता है, बल्कि जातिवादी व्यवस्था के विरुद्ध एक सशक्त आवाज भी बनता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि, मोहनदास नैमिशराय, रत्नकुमार सांभरिया जैसे कहानीकारों की रचनाओं में यह स्वरूप स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

कुँजीः साहित्य, संघर्ष, जातिवाद, दलित, रचना।

प्रस्तावनाः दलित कहानियों का स्वरूप मुख्य रूप से सामाजिक यथार्थ, अन्याय और प्रतिरोध पर केंद्रित है, जो भारतीय समाज में दलितों के शोषण, अपमान और मूलभूत अधिकारों से वंचित जीवन को चित्रित करती हैं, जिसमें अंबेडकरवादी चेतना और मानवीय गरिमा की स्थापना मुख्य उद्देश्य है; ये कहानियाँ अपनी विशिष्ट भाषा, बिंबों और शिल्प के माध्यम से दलितों की पीड़ा, विद्रोह और मुक्ति की आकांक्षा को व्यक्त करती हैं, जो कल्पना से दूर, कटु सच्चाइयों को उजागर करती हैं, जैसे प्रेमचंद की कहानियों में 'ठाकुर का कुआँ' की गंगी या 'सद्गति' का दुखी चमार।

विश्व के विभिन्न देशों में विविध आधारों पर स्तरीकरण की प्रक्रिया को देखा जा सकता है। कहीं प्रजातीय, कहीं दास प्रथा, कहीं वर्ग भेद और भारतीय समाज में जातिगत आधार पर विभेदीकरण दिखाई देता है। प्राचीन काल में वर्ण भेद और कालान्तर में जाति आधारित भेद–भाव ने समाज को उच्चता निम्नता की श्रेणियों में विभाजित कर अस्पृश्यता को जन्म दिया। जाति के कठोर नियमों के परिणामस्वरूप शूद्र अथवा दलितों को बहुत लम्बे समय तक निम्न, हेय, अन्याय पूर्ण, शोषित और अमानवीय जीवन जीना पड़ा। डॉ० अम्बेडकर के अनुसार, हिन्दू समाज उस बहुमंजिला इमारत की तरह है जिसमें प्रवेश करने के लिए न कोई सीढ़ी है और न ही कोई दरवाजा; जो जिस मंजिल में पैदा होता है उसे उस मंजिल में मरना होता है। भारतीय समाज में दलित समस्या का मूल इसकी संरचना में ही निहित है। सुधार आन्दोलनों और संवैधानिक प्रयासों के साथ ही हिन्दी साहित्य में दलितों की पीड़ा को कहानियों, काव्य, उपन्यासों, आत्मकथाओं तथा अन्य विधाओं के माध्यम से अभिव्यक्ति मिली, यही साहित्य दलित साहित्य के नाम से जाना गया। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य हिन्दी कहानियों और काव्य में दलित चेतना के विकास का विश्लेषण करना है।

किसी भी विधा में दलित साहित्य यथार्थ में दलित चेतना का साहित्य है। दलितों द्वारा भोगी गई उपेक्षा, अपमान, पीड़ा व शोषण की अभिव्यक्ति भी इस रूप में हो कि उससे व्यक्ति में हीनता बोध के स्थान पर जातीय स्वाभिमान और आत्म गौरव का विकास हो। दलित साहित्य अपने आप में एक नये युग, नव चेतना का साहित्य है। इसकी अपनी अलग धारा है। पीड़ा की अभिव्यक्ति है, तो नई आशा भी है। दलित साहित्य दलितों के सामाजिक, आर्थिक व नागरिक अधिकारों से वंचित, अन्याय, शोषण के प्रति नकार, विरोध और मुक्ति का उद्घोष है। जाति आधारित अस्पृश्यता, उच्चता–निम्नता, समाज में स्थापित अतार्किक मूल्यों, विश्वासों और ऐसी

मान्यताओं के विरुद्ध है जो मनुष्य को अमानवीय बना देता है।

हिन्दी दलित साहित्य का उभार की दृष्टि से 1980 ई0 के बाद का समय अधिक महत्वपूर्ण है। अस्सी के दशक से दलितों की सामाजिक, राजनैतिक स्थिति में एक विशेष परिवर्तन आया है। मोहनदास नैमिशराय, ओमप्रकाश वाल्मीकि, श्यौराज सिंह बेचैन आदि इस समय के चर्चित कहानीकार है; जिन्होने दलितों की समस्याओं को अपनी कहानियों के माध्यम से अभिव्यक्त करने का सफल प्रयास किया। यह बीसवीं सदी का अन्तिम दशक का, इस काल में दलितोत्थान का कार्य बड़े जोरों पर शुरू हुआ था। आजादी के पश्चात भी दलित स्वतंत्रता से वंचित ही रहे और उन्हें लगातार शोषण की मार झेलनी पड़ी। यहाँ तक कि इन्हें अपना मनपसन्द व्यवसाय करने, अच्छा रहन–सहन होना या अच्छी वेशभूषा पहनने पर भी पाबन्दी थी। इसी शोषण के अनवरत् कम ने सन् अस्सी के आस–पास दलित अस्तित्व और अस्मिता की मांग व विचार को जन्म दिया। दलित मुक्ति आन्दोलन दलित को एक मनुष्य के रूप में प्रतिष्ठित करने का पक्षधर है। परन्तु यह मुक्ति सकारात्मक होनी चाहिए, परिवार तथा समाज ऐसा बने जहां सवर्ण अवर्ण का वर्चस्व समान हो। दलित मुक्ति की आज सर्वाधिक आवश्यकता ग्रामीण क्षेत्रों में है, क्योंकि ग्रामीण दलित अशिक्षित होने के कारण आज भी पददलित है। ग्रामीण क्षेत्रों में दलित के अज्ञान ने उसकी प्रगति के सभी मार्ग अवरूद्ध कर दिए हैं। वह आज भी धार्मिक आडम्बरों और अंधविश्वासों में फंसा पुरानी रूढ़ियों को ही ढो रहा है। सामाजिक रूप से आज भी सवर्ण व दलित की स्थिति में अन्तर मिट नहीं सका है। स्वतंत्रता के बाद भी सवर्णों द्वारा जातिगत भेदभाव, छुआछूत, अपमान, शोषण, तिरस्कार तथा अपने से हीन एवं निम्न समझना आदि कुरीतियों में दबा हुआ दलित दिखाई दे रहा है। यद्यपि आर्थिक दृष्टि से वह अब आत्मनिर्भर अवश्य होने लगा है, किन्तु प्रत्येक क्षेत्र में अभी स्वाधीन नहीं हो सका है।

समकालीन जीवन की ज्वलंत समस्याओं को उद्घाटन प्रत्येक साहित्यकार का लक्ष्य रहता है। दलित कहानीकारों के भीतर के रचनाकार ने भी इसी लक्ष्य का संधान किया है। दलित कहानीकारों की कहानियां उन समस्याओं से लोगों को परिचित ही नही कराती अपितु उन समस्याओं के भीतर पहुंचकर उन्हें पहचानने और समझने को प्रयास करने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

दलित कहानियों का स्वरूप दलित साहित्य की विशेषता से जुड़ा है, जो दलित चेतना की अभिव्यक्ति पर आधारित होता है। स्वरूप में दलित अनुभवों की कच्ची और प्रत्यक्ष अभिव्यक्ति प्रमुख है, जहाँ कहानियाँ दलित जीवन की वास्तविकता को प्रतिबिंबित करती हैं। दलित कहानियाँ सरल, बोलचाल की भाषा में लिखी जाती हैं, जो मुख्यधारा साहित्य की अलंकृत शैली से अलग है। इनकी विशेषताएँ दलित चेतना, सामाजिक अन्याय पर प्रहार और प्रतिरोध की भावना हैं। उदाहरणस्वरूप, दलित कहानियों में भाषा की सादगी और वास्तविकता की करुणा प्रमुख विशेषता है।

दलित साहित्य में सौंदर्यबोध (सौन्दर्य बोध) भी एक महत्वपूर्ण तत्व है, जो दलित कहानियों के माध्यम से संयोजित सांस्कृतिक सौंदर्य ईंट या ईंट भट्टे में निहित होता है, जो दलितों की मेहनत, दुख और शक्ति को दर्शाता है। दलित कहानियाँ दलित संस्कृति की बहुआयामीता को उभारती हैं, जहाँ दुख और संघर्ष भी सौंदर्य का रूप ग्रहण कर लेते हैं। मुख्यधारा साहित्य से अंतर यह है कि दलित कहानियाँ जीवन की जीवंतता और दलित पहचान को प्राथमिकता देती हैं, जबकि मुख्यधारा कला और सौंदर्य पर जोर देती है।

दलित कहानियों की संरचना सरल लेकिन प्रभावशाली होती है, जो दलित संघर्ष को केंद्र में रखती है। संरचना में परिचय, संघर्ष और समाधान का क्रम दलित अनुभवों की गहराई को उजागर करता है।

ये कहानियाँ रैखिक और गैर–रैखिक दोनों रूपों में हो सकती हैं, लेकिन मुख्य रूप से दलित चरित्र के उत्पीड़न से शुरू होकर प्रतिरोध तक पहुँचती हैं। आकार की दृष्टि से ये तीन प्रकार की हैंः लंबी कहानियाँ (जैसे उपन्यास), छोटी कहानियाँ और मध्यम आकार की।

उदाहरणस्वरूप, दलपत चौहान की कहानियों में संरचना दलित अनुभवों की परतों पर आधारित है, जहाँ कथानक रोजमर्रा के जीवन से शुरू होकर सामाजिक मुद्दों की ओर बढ़ता है। उनकी कहानी "होम" में दलित दंपत्ति का घर बनाने का सपना ऊपरी जातियों द्वारा नष्ट कर दिया जाता है, जो संरचना में तनाव और ट्रेजेडी का निर्माण करती है। इसी प्रकार, "टच ऑफ ए स्नेक" में ट्रेजिक आर्क दलित बच्चे की मौत के माध्यम से सामाजिक अमानवीयता को उजागर करता है। दलित कहानियों में प्रतीकवाद और रूपक का उपयोग प्रमुख है, जैसे "सलेम" में दलित महिलाओं की स्थिति का प्रतीक।

दलित आंदोलन से दलित कहानियों का विकास हिंदी साहित्य में 20वीं सदी के अंत से हुआ, जहाँ प्रारंभिक चरण में व्यक्तिगत पीड़ा पर फोकस था, जबकि आधुनिक में सामाजिक संरचना पर। जुड़ा यह विकास सरल कथानक से जटिल सामाजिक चित्रण तक पहुँचा है। दलित कहानियाँ सामाजिक परिवर्तन की दिशा में योगदान देती हैं, दलितों की आवाज को मंच प्रदान करती हैं।

दलित कहानियों की प्रमुख विशेषताएँ (स्वरूप)

दलित कहानियों का स्वरूप निम्नलिखित विशेषताओं से निर्धारित होता है–

1. **यथार्थवादी चित्रण और स्वानुभूतिः** दलित कहानियाँ जीवन की कटु सच्चाइयों को बिना किसी अलंकरण के प्रस्तुत करती हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह 'सलाम' और 'घुसपैठिए' में दलितों के अपमान, छुआछूत और आर्थिक शोषण का मार्मिक चित्रण है। उदाहरणस्वरूप, 'सलाम' कहानी में दलित पात्रों की मानसिक द्वंद्व और सामाजिक उपेक्षा दिखाई गई है। यह यथार्थ नकल नहीं, बल्कि दलित अनुभव का पुनसृजन है।
2. **प्रतिरोध और विद्रोह की चेतनाः** पारंपरिक कहानियों से भिन्न, दलित कहानियाँ केवल पीड़ा नहीं दिखातीं, बल्कि प्रतिकार भी। जयप्रकाश कर्दम की कहानियाँ (जैसे 'नो बार') में शिक्षित दलित युवक जातिगत भेदभाव का सामना करते हुए भी अपनी अस्मिता बनाए रखते हैं। यह अम्बेडकरवादी विचारधारा से प्रेरित है, जो समता और प्रतिरोध पर जोर देती है।

- **चेतना और विचारधाराः** ये कहानियाँ सामाजिक न्याय, समानता, और रूढ़ियों के विरुद्ध जागृति पैदा करती हैं।
- **सामाजिक परिप्रेक्ष्यः** दलित कहानियाँ केवल दलितों तक सीमित नहीं, बल्कि स्त्री शोषण और अन्य सामाजिक मुद्दों को भी छूती हैं।
- **प्रामाणिकताः** आत्मकथाओं की तरह ये प्रामाणिक होती हैं, लेकिन कल्पना के माध्यम से व्यापक प्रभाव डालती हैं।

हिंदी दलित साहित्य में कहानियाँ दलितों की अमानवीय यातना, शोषण, और संघर्ष को उजागर करती हैं। उदाहरणस्वरूप, ओमप्रकाश वाल्मीकि, नरेंद्र कश्यप जैसे लेखकों की कहानियाँ दलित जीवन की पीड़ा को दर्शाती हैं, जहाँ दलितों को दबाया जाता है लेकिन वे अधिकार मांगते हैं।

निष्कर्षः दलित कहानियाँ हिंदी साहित्य को नई चेतना प्रदान करती हैं। इनका स्वरूप भोगे हुए यथार्थ, दलित चेतना, और सामाजिक परिवर्तन पर आधारित है। दलित साहित्य समाज के विकारों को दूर करने का प्रयास करता है, और मुख्यधारा में एकीकृत हो रहा है। हालांकि, दलितों की वास्तविक स्थिति में परिवर्तन की आवश्यकता है। यह अध्ययन दर्शाता है कि दलित कहानियाँ मात्र साहित्य नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति का माध्यम हैं। भविष्य में इनका और अधिक अध्ययन दलित विमर्श को मजबूत करेगा।

दलित कहानियों का स्वरूप दलित चेतना, प्रतिरोध और सामाजिक न्याय पर आधारित है, जो मुख्यधारा साहित्य से भिन्न एक अनोखी संरचना और सौंदर्यबोध प्रस्तुत करता है। ये कहानियाँ न केवल दलित जीवन को दस्तावेजीकृत करती हैं, बल्कि सामाजिक असमानता को चुनौती भी देती हैं। आगे के शोध में दलित कहानियों के तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता है, ताकि उनके साहित्यिक योगदान को और गहराई से समझा जा सके।

उपरोक्त तथ्यों के अतिरिक्त दलित विमर्ष अथवा विश्लेषण करते समय एक–दूसरे दृष्टिकोण से भी चर्चा करना महत्वपूर्ण होगा। यह सत्य है कि भारतीय समाज में लम्बे समय तक दलितों का शोशण हुआ उन्हें असहनीय दर्द व पीड़ा, शोषण और संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करना पड़ा और कालान्तर में जाति व्यवस्था धीरे–धीरे जातिवाद में परिवर्तित होती चली गई और आज जातिगत कट्टरतावाद, ब्राह्मणवाद और दलितवाद जन्म ले चुका है। यद्यपि दलित साहित्यकारों का उद्देश्य जाति व्यवस्था को समाप्त कर एक समतावादी समाज की स्थापना करना है लेकिन जहाँ वे अपनी जाति को सशक्त बनाकर प्रतिशोध के स्तर पर आमने–सामने खड़े हैं वहाँ समता की स्थापना काल्पनिक प्रतीत होती है। ठीक उसी तरह से जैसे कार्ल मार्क्स ने वर्गविहीन समाज की कल्पना की थी। आज दलित साहित्य ने साहित्य के केन्द्रीय आख्यान के रूप में वर्ण विरोधी विचारधारा को स्थापित करने का प्रयत्न किया है जिससे दलित अस्मिता को सफलतापूर्वक रेखांकित किया जा सकता है। साथ ही आवश्यकता इस बात को समझने की है कि जातिगत समस्या का हल प्रतिशोध अथवा जातिवाद को बढ़ावा देने

में नहीं ढूंढा जा सकता है अपितु मानवीय मूल्यों को विकसित कर एक नवीन समाज को स्थापित करने की आवश्यकता है, जहाँ तक दलित साहित्य की बात की जाए तो दलित साहित्यकार अपनी मौलिकता पर जोर देते हुए अपने मूलाधार से जुड़े रहें।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

सन्दर्भ ग्रंथ सूची–

1. डॉ० रामचन्द, (2014), 'दलित कविताओं का स्वर परिवर्तनगामी है, दलित चेतना की कविताएं (सम्पादित), प्रवीण कुमार, पृष्ठ 7
2. नोटबुक, पेज 8
3. https://m.sahitakunj.net
4. सिंह, डॉ० श्यौराज. (2006), 'कौंच हूँ मैं' बेचैन, इतिहास बोध प्रकाशनः दिल्ली. पृष्ठ 53
5. कदम, डॉ० स्वर्णलता. (2012), 'साठोत्तरी हिन्दी काव्य में दलितगत चेतना का निरूपण', (पत्र प्रस्तुति), राष्ट्रीय संगोष्ठी, वर्तमान समाज और साहित्य में दलित विमर्श, वी०एम०एल०जी० कॉलेज : गाजियाबाद, पृष्ठ 53.
6. https://www.hindwi.org (कविता)
7. सिंह, तेज, सम्पादकीय, (2012), 'अपेक्षा' (पत्रिका), नई दिल्ली, पृष्ठ 4
8. प्रेमचंद, कक्कड़, रामआसरे (1950). 'प्रेमचंद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ, हिंदी साहित्य प्रेसः इलाहाबाद. पेज 108
9. चंद्र, महेश, वाल्मीकि, ओमप्रकाश (2012), 'कथा सौरभ' (संपादक), 'पच्चीस वर्ग और आधा, लोक भारती प्रकाशनः इलाहाबाद, पेज 114.
10. नोटबुक, पेज 116.
11. नोटबुक, पेज 116.
12. कीर्ति, डॉ० विमल. (2001). 'दलितपन सामाजिक व्यवस्था की देन है. (सम्पादित) डॉ० श्यौराज सिंह 'बेचैन', डा० रजत रानी 'मीनू', 'दलित दखल', श्री साहित्य संस्थान लोनीः गाजियाबाद. पृष्ठ 89.

Cite this Article-

'अमित कुमार', 'दलित कहानियों का स्वरूप– एक अध्ययन' *Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:01, January 2025.*

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i10013

Published Date- 10 January 2025